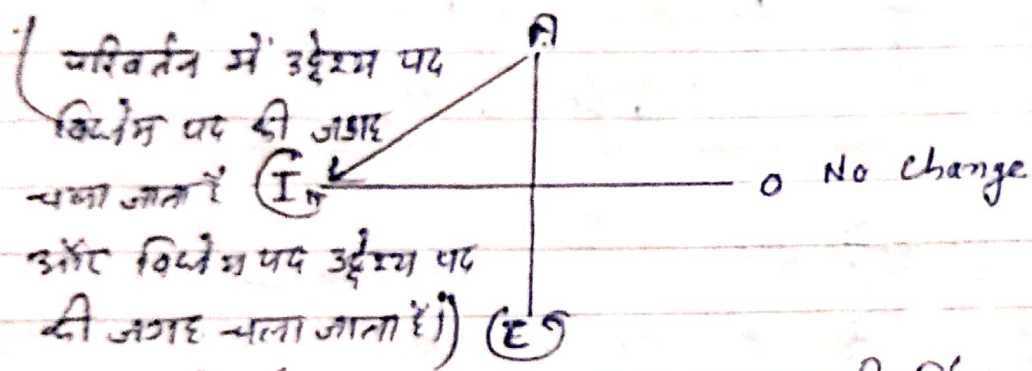


परिवर्तन (Conversion)

अन्वयहित अनुमान का सर्वाधिक स्पष्ट प्रकार यह है जिसमें किसी तर्कवाक्य के दो अर्थों और क्थिमें परस्पर स्थानान्तरण कर दिए जाते हैं। इसे परिवर्तन (Conversion) कहते हैं और क्थिमें परस्पर स्थानान्तरण यह है और इ तर्कवाक्यों के विषय में पूर्ण वैध है।

- कोई मनुष्य देवता नहीं है
- कोई देवता मनुष्य नहीं है



- | | |
|---------------------|---------------------------------------|
| परिवर्तन | परिवर्तित |
| A. सभी उ वि है | I. कुछ वि उ है (by limitation परिमित) |
| E. कोई उ वि नहीं है | E. कोई वि उ नहीं है। |
| I. कुछ उ वि है | I. कोई वि उ है। |
| O. कुछ उ वि है | कोई परिवर्तित वाक्य नहीं |

प्रतिवर्तन (Obversion)

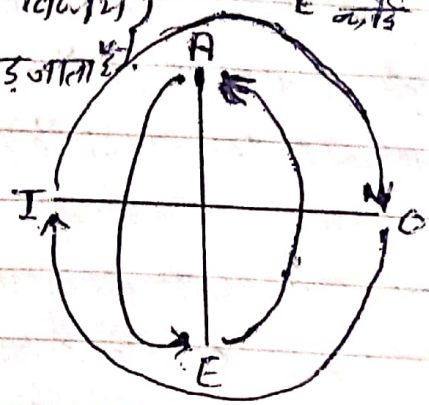
प्रतिवर्तन में उद्देश्य अपरिवर्तित रहता है और प्रतिवर्तित होने वाले तर्कवाक्य का परिणाम भी अपरिवर्तित रहता है। किसी तर्कवाक्य के प्रतिवर्तन में हम तर्कवाक्य का गुण परिवर्तन करते हैं और क्थिमें के स्थान पर उल्टा पुरक पद रखते हैं।

चारों मानक आकार के निरूपण

तर्कवाक्य के प्रतिवर्तन होते हैं और उन का 'प्रतिवर्तन' रूप अण्यवाहित अनुमान वैध है। इस प्रकार के किसी भी अनुमान में आधारवाक्य को "प्रतिवर्तक" (obvertend) और निकर्ष को "प्रतिनर्तित" (obverse) तर्कवाक्य कहते हैं।

(प्रतिवर्तन में विषय पद में 'अ' जुड़ जाता है।)

A सभी मनुष्य बौद्धिक हैं
E कोई मनुष्य अबोधक नहीं है।



प्रतिवर्तक

- A सभी उच्च हैं।
- E कोई उच्च नहीं है।
- I कुछ उच्च हैं।
- O कुछ उच्च नहीं हैं।

प्रतिनर्तित

- E कोई उच्च नहीं है।
- A सभी उच्च हैं।
- O कुछ उच्च नहीं हैं।
- I कुछ उच्च हैं।

प्रतिपरिवर्तन (Contrapositive)

किसी दिए हुए तर्कवाक्य का 'प्रतिपरिवर्तन' करने के लिए हम इसके उद्देश्य पद के स्थान पर इसके विषय पद का पूरक रखते हैं और इसके विषय पद के स्थान पर इसके उद्देश्य पद का पूरक रखते हैं। इस प्रकार "सभी"

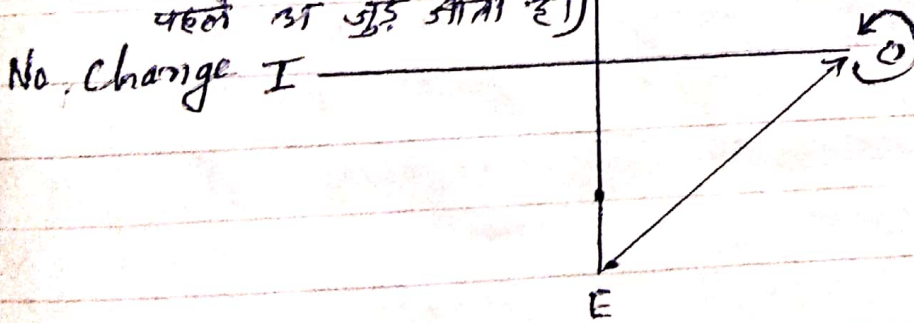
"सभी सदस्य मतदाता हैं"
"सभी असमतदाता असदस्य हैं"

यदि हम E तर्कवाक्य का प्रति-परिवर्तित वाक्य प्रचक्रम प्रतिवर्तन, परिवर्तन और प्रतिवर्तन करके निकालने का प्रयत्न करें

तो इसका अव्ययता का कारण हमें मिल जाता है। कोई उ वि नहीं है। इस E तर्कवाक्य का प्रतिवर्तित वाक्य है। ~~सोरोपीउ अ-वि~~ यह A तर्कवाक्य है। यह केवल परिमित ढंग से ही व्ययतापूर्वक परिवर्तित किया जा सकता है। यदि इसका परिमित परिवर्तन करके हम 'कुद अ-वि उ है' प्राप्त करें और फिर इसका प्रतिवर्तन करें तो हमें 'कुद अ-वि अ-उ नहीं है' मिलता है जिसे हम "परिमित प्रतिपरिवर्तन" कह सकते हैं।

प्रतिपरिवर्तन केवल 'A' और 'O' के साथ ही अव्ययवहित अनुमान का व्यय प्रकार है। 'I' के लिए तो यह प्रतिपरिवर्तन बिलकुल व्यय नहीं है और 'E' तर्कवाक्य के लिए केवल परिमित ढंग से ही व्यय है।

(प्रतिपरिवर्तित में उर्ध्व पद की जगह विध्वंस और विध्वंस पद की जगह उर्ध्व पद चले जाते हैं और दोनों के पहले अ जुड़ जाता है।)



आध्यात्मवाक्य

- A सभी उ वि है।
- E कोई उ वि नहीं है।
- I कुद उ वि है।
- O कुद उ वि नहीं है।

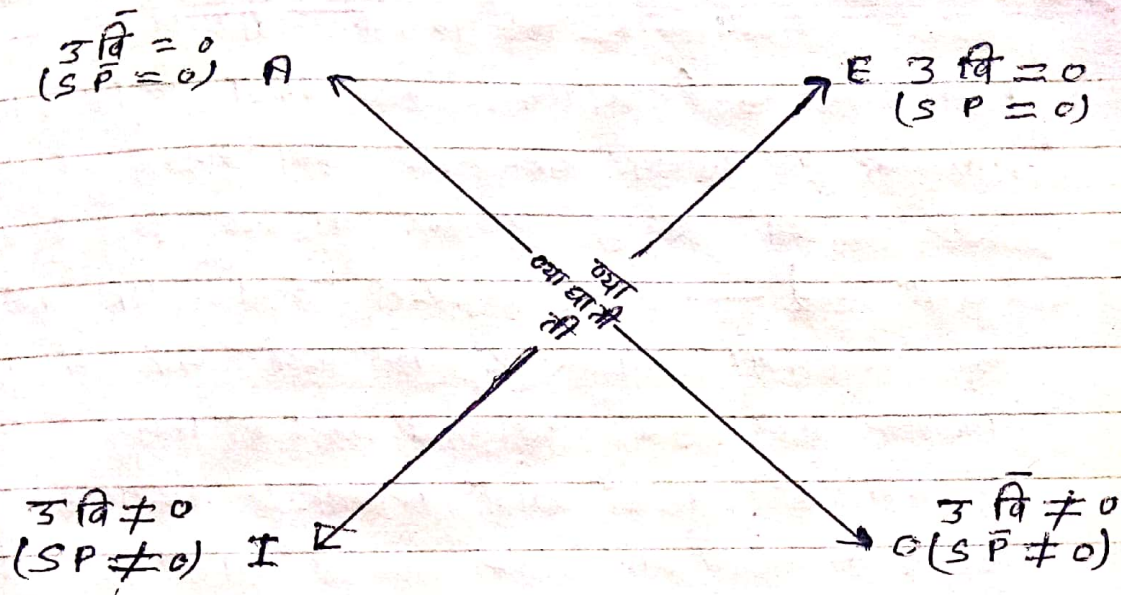
प्रतिपरिवर्तित




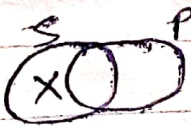
- A सभी अवि अ-उ है।
- O कुद अ वि अ-उ नहीं है (परिमित अव्यय)
- O कुद अ-वि अ-उ नहीं है।

अदि कोई तर्कवाक्य किसी विशिष्ट प्रकार के पदार्थों की सत्ता का कथन करता है तो इसे 'सत्तात्मक तात्पर्य' वाला कहते हैं। उदाहरणार्थ, 'मीरे इस्क पर पुस्तकें हैं' यह तर्कवाक्य सत्तात्मक तात्पर्य रखता है "कुछ" शब्द की हमारी चर्चा के कि अंगण्वापी तर्कवाक्यों में सत्तात्मक तात्पर्य होता है। 'कुछ सैनिक बहादुर होते हैं' यह 'I' तर्कवाक्य यह कथन करता है कि कम से कम एक सैनिक ऐसा है जो बहादुर है। और 'कुछ सैनिक बहादुर नहीं हैं' यह 'O' तर्कवाक्य कहता है कि कम से कम एक ऐसा सैनिक है जो बहादुर नहीं है। दोनों ही अंगण्वापी तर्कवाक्य यह बताते हैं कि उनके उद्देश्य पद द्वारा अभिहित वर्ग रिक्त या अस्तित्व नहीं होते अर्थात् उनमें कुछ सदस्य अवश्य होते हैं।

अदि हम यह स्वीकार करते हैं कि 'I' और 'O' तर्कवाक्यों में सत्तात्मक तात्पर्य होता है तो पारम्परिक विशिष्ट-वर्ग से यह निःसृत ही कि 'A' और 'E' तर्कवाक्यों में भी सत्तात्मक तात्पर्य होता है। क्योंकि अदि 'I' तर्कवाक्य वैयाक्य से उपाश्रयण द्वारा तदसंगत 'आ' से निःसृत होता है और 'O' सत्ता का कथन करता है तो 'A' भी अवश्य ही 'सत्ता' का कथन करेगा। उसी प्रकार, अदि 'O' में सत्तात्मक तात्पर्य होता है तो 'E' में भी होना चाहिए। अदि हम 'A' के परिमित परिवर्तन 'E' के परिमित प्रतिपरिवर्तन की वैधता स्वीकार करें तो 'A' और 'E' का सत्तात्मक तात्पर्य 'I' और 'O' से सत्तात्मक तात्पर्य से निकलता है।

G. निरूपणात्मक तर्कनाम के लिए प्रतीक और रेखाचित्र 17



- A. $S\bar{P} = 0$ 
- E. $SP = 0$ 
- I. $SP \neq 0$ 
- O. $S\bar{P} \neq 0$ 

Dr. Suresh Ram
 Dept. of Philosophy
 D.K. College, Dumraon
 V.K.S.U. Ara